जिस व्यक्ति को खुद पर भरोसा होता है, वह दूसरों का भरोसा भी कायम रखने में समर्थ होता है।
–अज्ञात।

विचार-प्रवाह देहरादून, मंगलवार, 19 अप्रैल 2022

पेज थ्री
www.page3news.in

काँच की छत है तो टूटेगी ही

महिलाओं को केवल 'काँच की छत' नहीं तोड़नी है बल्कि 'काँच की छत' की अवधारणा को ही तोड़ देना है। हमें जो समाज विरासत में मिला उसमें काँच की छत थी मगर अब हमें लड़कियों को मजबूत पंख और खुला नील गगन देना है जिसमें वह पूरी क्षमता के साथ उड़ सके।

आरती सिंह।।

महिलाओं को सदा कहा जाता है कि वह एक सीमा तक ही ऊपर उठ सकती है जिसे एक काँच की छत के समान बताया गया है और ये बताया जाता है कि इसके बाहर वह नहीं जा सकती। अब, जब काँच की छत है तो टूटेगी ही। महिलाओं को केवल 'काँच की छत' नहीं तोड़नी है बल्कि 'काँच की छत' की अवधारणा को ही तोड़ देना है। हमें जो समाज विरासत में मिला उसमें काँच की छत थी मगर अब हमें लड़कियों को मजबूत पंख और खुला नील गगन देना है जिसमें वह पूरी क्षमता के साथ उड़ सके।

आज यह जरूरी है क्योंकि वह हर जगह काम कर रही है– सेना, पुलिस, कोर्ट, अस्पताल, एयरपोर्ट, बैंक, कंपनी, इंजीनियरिंग फर्म, कला, खेल, संस्कृति के साथ–साथ घर भी। उनका 'ब्यूटीफुल माइंड' हर जगह नजर आता है। उसे केवल एक सजावटी आकृति के रूप में चित्रित करने के लिए सामंती मानसिकता का समर्थन अब अवांछनीय है। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि राज्य की अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और विश्व अर्थव्यवस्था का संतुलित विकास काफी हद तक श्रम शक्ति सहित संसाधनों की पूर्ण गतिशीलता (उपयोग) पर निर्भर करता है। महिलाओं की आबादी कुल आबादी का लगभग 48: है, आर्थिक क्षेत्रों में उनकी पूर्ण भागीदारी सभी देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के लिए तत्काल आवश्यक है। यह आवश्यक है कि उन्हें स्कूल और कॉलेज में शिक्षा, स्वच्छ शौचालय और वातावरण मिले और आय अर्जित करने के लिए व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रशिक्षण, मोबाइल फोन और कंप्यूटर मिले। परिवार की ओर से उन्हें सुरक्षा और सहारा मिले।

आर्थिक विकास में उनके योगदान के बारे में लड़के और लड़कियों दोनों को संवेदनशील बनाया जाये। उन्हें समाज के मजबूत खम्भे या हितधारकों के रूप में एक–दूसरे की मदद करने और उनका सम्मान करने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। उसके उत्पीड़न या शोषण को सही ठहराने वाले किसी भी बयान की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और ऐसे लोगों को तत्काल दंडित किया जाना चाहिए। उसके महत्व की सही धारणा, उसकी क्षमताओं का सही आकलन, शिक्षा का पर्याप्त अवसर और काम की क्षमता का उचित उपयोग राज्य, राष्ट्रीय और विश्व अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में विकास के इंजन के रूप में कार्य कर सकता है।

राष्ट्रीय आय आर्थिक और भौतिक प्रश्न है, केवल आर्थिक विशेषज्ञों, चिकित्सकों, औद्योगिक विशेषज्ञों और महिलाओं को ही यह तय करना चाहिए कि अर्थव्यवस्था के लिए इष्टतम परिणाम प्राप्त करने के लिए उनके पास क्या क्षमता है।

धार्मिकता का अवतार

अशोक वोहरा।
धार्मिक अनुभव के तंत्रिका विज्ञान पर शोध से पता चलता है कि शरीर की गतिविधि धार्मिक जीवन का एक आवश्यक हिस्सा है। इस क्षण तक विज्ञान द्वारा आत्मा या आत्मा की भूमिका की न तो पुष्टि की जा सकती है और न ही उसका खंडन किया जा सकता है। न्यूनीकरणवाद बताता है कि धर्म शरीर विज्ञान से ज्यादा कुछ नहीं है। उद्‌भववाद, तर्क देता है कि मानव धार्मिकता भौतिक प्रणालियों के संगठन की प्रकृति से उत्पन्न होती है और इस अर्थ में कारण है कि यह संपूर्ण प्रणाली का संगठन है जो सामाजिक दुनिया के साथ बातचीत करता है और शारीरिक। इस समीक्षा से यह इस प्रकार है कि धर्म एक जटिल समाजशास्त्रीय निर्माण है जो व्यापक प्रकार के समूह और व्यक्तिगत गतिविधियों, घटनाओं, दृष्टिकोणों, व्यवहारों और अनुभवों को शामिल करता है, ताकि धर्म का एक उपयुक्त तंत्रिका विज्ञान समान रूप से विविध हो।

संपादकीय

आसान तरीका

अभी सोशल मीडिया पर 'द कश्मीर फाइल्स' नाम के फिल्म की चर्चा खूब हो रही है. मैंने खुद इस फिल्म से जुड़े इतने असंवेदनशील मीम्स देखे हैं जिसमें दंगा भड़काने तक का पूरा पोटास है। कुछ महीने पहले बैंगलोर में एक रिलीजियस फिगर को लेकर मीम शेयर करने को लेकर खूब बवाल कटा था। अगर आप किसी भी दिन का अखबार उठाकर देख लें तो आपको ऐसे कई उदाहरण बिना मेहनत किए नजर आ जाएंगे। सोशल मीडिया की दुनिया दिखे भले ना मगर सच में काफी निसत्व हो गई है और मीम के नाखून बुरी तरह बढ़ आए हैं। अब हर तरह की पोस्ट से पहले मीम के खिलाफ युद्ध करना जरूरी हो गया है। जो बात हंसी–मजाक से शुरू हुई थी वो आज दंगा भड़काने जितनी भयावह हो चुकी है इसलिए जरूरी है सचेत रहना। बिलकुल सही है कि आदमी हर समय कॉन्सशियस नहीं रह सकता है लेकिन अगर कोशिश करें तो हर रोज कुछ वक्त के लिए ही सही लेकिन कॉन्सशियसली कॉन्सशियस रहना उतना मुश्किल भी नहीं। कोई भी मीम देखने के साथ ही एक बार सोचिए कि जिस बात पर मुझे हंसी आ रही है क्या किसी को ये बात बुरी भी लग सकती है? अगर हल्का सा भी शक हो तो उस मीम या पोस्ट को बिलकुल भी एंटरटेन ना करें। अपने–आप से सवाल करते रहिए कि क्या आपके लिए जो लक्जरी है, जिस स्तर की बातों पर आप मजाक कर सकते हैं, क्या किसी दूसरे धर्म–समुदाय या लिंक का व्यक्ति उतना सहज हो सकेगा? अंत में हममें से कोई भी अनबायस्ड नहीं है, कोई भी विचार से मुक्त नहीं है। हम सबकी एक विचारधारा है। हम सब कहीं ना कहीं झुके हुए हैं। तो अगर इस विशियस साइकिल में फंस ही गए हैं और निकलने खास मन नहीं है तो कम से कम अपना स्टैंड क्लियर रखें और मीम का इस्तेमाल प्रोपगैंडा के लिए कम से कम और एंटरटेनमेंट के लिए ज्यादा से ज्यादा करें।

मीम का दखल बाजार पर इतना ज्यादा बढ़ चुका है कि अब सारी बड़ी–बड़ी कंपनियों, चाहे वो बैंक ही क्यों न हो, के सोशल मीडिया डिपार्टमेंट में मीम बनाने के लिए स्पेशलिस्ट बैठे होते हैं।

मीम क्या है और कहाँ से आया?

मयंक कुमार।।

सोशल मीडिया। क्या कमाल की चीज है न! फोन पर दो–तीन बार उंगलियां टैप करो और पूरी दुनिया से जुड़ जाओ। दोस्त की फोटो पर हाहा–ठीठी करने से लेकर अमेरिकी प्रेसिडेंट से सवाल करने तक, सब जुगाड़ उपलब्ध है। मुमकिन है कि मेरा ये पीस आप सोशल मीडिया पर ही पढ़ रहे हों। यहां हर समस्या का समाधान है और हर तरह के नॉर्मल इंसान के दिमाग में कूड़ा डालने के लिए लोग बैठे हैं। हजारों किलोमीटर दूर हो रहे युद्ध के समर्थन में यहां डीपियाँ चेंज होती हैं तो लेफ्ट–राइट–फ्रंट–बैक, सबकी मुबाहिसें भी आम हैं। बच्चों को दिन भर फोन में घुसे रहने के लिए हड़काने वाले पेरेंट्स भी आजकल घंटों रील्स देखते पाए जाते हैं।

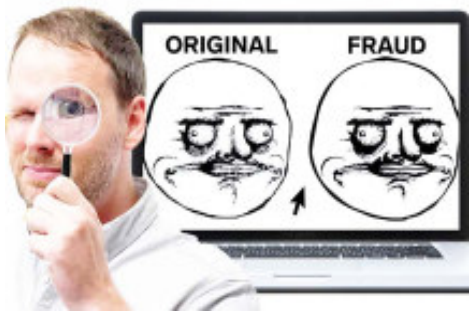

लब्बोलुआब ये कि भैया अब मेटावर्स इतना भी वर्चुअल नहीं रह गया है, हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन चुका है। और इस मेटावर्स पर सबसे ज्यादा टाइम कंज्यूमिंग कुछ है तो वो है 'मीम'. अब हैडलाइन में जो बड़ी–बड़ी बातें आपको पढ़ने को मिली हैं, उसका इससे क्या रिश्ता–नाता है वो तो जानेंगे ही, लेकिन उससे पहले समझते हैं कि ये मीम क्या है बला! 1976 में ब्रिटिश इवोल्यूशनरी बायोलॉजिस्ट रिचर्ड डॉकिन्स ने अपनी किताब 'द सेल्फिश जीन' में पहली बार 'मीम' के कांसेप्ट को इंट्रोड्यूस किया। 'मीम' शब्द ग्रीक के 'मिमेमा' से आया है जिसका मतलब होता है इमीटेशन या नकल करना। डॉकिन्स ने मीम को बायोलॉजिकल जीन्स यानी वंशाणु के पैरेलल स्थापित किया और कहा कि ये 'सेल्फिश' या फिर मतलबी किस्म के जीन्स हैं। जीन यों कि ये भी एक इंसान से दूसरे इंसान तक इन्फॉर्मेशन कैरी करते हैं और समय के साथ इवॉल्व होते रहते हैं. और मतलबी यों कि अपने–आप को जरुरत के मुताबिक रिप्रोड्यूस कर सकते हैं। रिचर्ड डॉकिन्स ने आगे लिखा कि किसी भी संस्कृति में मीम आईडिया, कौशल, आदत या फैशन का रूप ले सकता है। इसके ट्रांसमिशन का माध्यम मौखिक, शाब्दिक, विजुअल या फिर कोई भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो सकता है। कोई मीम कितना सफल या पॉपुलर होगा, ये इस बात पर निर्भर करता है कि वो उस संस्कृति से कितना जुड़ा हुआ है।

भारत में जियो क्रांति के बाद जो इंटरनेट की सुलभता लोगों तक पहुंची, मीम्स ने वो पूरा बाजार अपने कब्जे में ले लिया। ध्यान रहे मैंने बहुत ध्यानपूर्वक 'बाजार' शब्द का प्रयोग किया है। जो बातें पहले 2–4 लाइन लिखकर कही जाती रहीं, उसके लिए अब एक रिलेटेबल तस्वीर ही काफी है। अब सोशल मीडिया के कमेंट सेक्शन में भी हम किसी बात का जवाब लिखकर देने की बजाय उससे जुड़ा कोई मीम ढूंढने लगते हैं कि हमारा आंसर ज्यादा विटी लगे। एक पूर्व मीडिया संस्थान में काम करने के दौरान मैंने देखा था कि लोगों ने नौकरी के लिए जो सीवी तैयार की उसमें भी उन्होंने मीम क्रिएट कर डाला हुआ था।

अब सवाल उठता है कि मीम आखिर है क्या! मीम मूलतः किसी आईडिया की कॉपी होते हैं लेकिन इसका उपयोग बिल्कुल अलग हो सकता है। किसी फिल्म के बहुत भावुक दृश्य को बहुत ही फनी सिनेरियो के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'राजी' फिल्म के आखिर में एक सीन है जिसमें आलिया भट्ट का किरदार रोते हुए घर जाने की बात करता है लेकिन आलिया भट्ट की उस सीन का ग्रैब आपको ऑफिस में काम करने वाले या किसी टफ कोर्स के स्टूडेंट्स यूज करते हुए दिखेंगे जिसमें उन्हें अपना काम छोड़ने का मन कर रहा हो।

अष्टयोग-4884

7	4	5	2			
	38		32	1	27	7
	3			6		2
	30		40	7	32	
6	1	4			5	3
	24		36	4	30	5
1			7		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4883 का हल

5	1	3	6	7	2	4
6	34	6	33	1	33	7
7	5	1	3	6	4	2
1	26	2	29	4	33	5
4	1	5	6	2	7	3
3	30	4	37	5	33	6
2	4	7	5	3	6	1

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग
कोई मीम कितना सफल या पॉपुलर होगा

मोहन। रिचर्ड डॉकिन्स ने अपनी किताब 'द सेल्फिश जीन' में लिखा है, 'कोई मीम कितना सफल या पॉपुलर होगा, ये इस बात पर निर्भर करता है कि वो उस संस्कृति से कितना जुड़ा हुआ है'। मीम का सीधा सम्बन्ध उसकी पॉपुलैरिटी से है। हर कोई चाहता है कि कुछ ऐसा कंटेंट बन जाए जो धड़ाधड़ सोशल मीडिया पर शेयर होने लगे और लोग उसकी वाहवाही करें। वायरल मीम बनाने का सीधा सा फंडा है कि ऐसे टॉपिक पर मीम बनाएं जो ट्रेंडिंग हो। जिसके बारे में लोग ज्यादा देखना–पढ़ना चाहते हों। फेसबुक पर एक पेज है जिसका नाम है 'मैड मुगल मीम्स'। इस पेज पर आपको फैक्चुअल मुगल इतिहास मीम के रूप में दिखेगा। कारण दृ इजी टू कंज्यूम और एक से दो तस्वीरों में ढेर सारा कंटेंट। अब जब ट्रेंडिंग टॉपिक का वैक्यूम क्रिएट होगा तो सीधा सा विज्ञान है कि कंटेंट चारों तरफ से उसे भरने की कोशिश करेगा। ये कंटेंट आपके गली–मोहल्ले, स्कूल–कॉलेज–ऑफिस, रिलेशनशिप्स, और मंदिर–मस्जिद से लेकर रोजमर्रा की खबरों से भी आएगा।